भाकृअनुप - राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक 753 006

कृषि सलाहकार सेवा

सितंबर 2024 के द्वितीय पखवाड़े की रणनीतियाँ

- *उथली निचलीभूमि/मध्यम भूमि में अधिक उपज देने वाली किस्मों के रोपित धान में 35 किलो यूरिया/एकड़ और 42 किलो यूरिया/एकड़ संकर किस्मों के लिए जुताई के चरण (रोपाई करने के 20-25 दिन बाद) पर प्रयोग करें। सामान्य रोपित धान में 17.5 किग्रा यूरिया प्रति एकड़ के साथ बाली निकलने की अवस्था में (रोपाई करने के 50-55 दिन बाद) उर्वरक की दूसरी टॉप ड्रेसिंग करें जबकि रेतीली मिट्टी में 17.5 किग्रा यूरिया और 13 किग्रा एमओपी प्रयोग करें।*
- *जब भी दो मुड़ी हुई पत्तियां/पूंजा दिखाई दें तो पत्ता मोड़क को नियंत्रित करने के लिए क्लोरेंट्रानिलिप्रोल 18.5% एससी 60 मिली/एकड़ दर पर या टेट्रानिलिप्रोल 200 एससी 100-120 मिली/एकड़ दर से या फ्लूबेंडियामाइड 20 डब्ल्यूजी 50 ग्राम/एकड़ या क्विनालफोस 25 ईसी डब्ल्यूपी 400 ग्राम/एकड़ दर से 200 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।*
- *झुंड वाले इल्लियों/केस वर्म/हिस्पा के संक्रमण के मामले में, क्लोरपाइरीफॉस 20 ईसी 500 मिली/एकड़ दर से या फेन्थोएट 50% ईसी 400 मिली/एकड़ दर से छिड़काव करें। छिड़काव के लिए प्रति एकड़ 200 लीटर पानी का प्रयोग करें।*
- *गॉल मिज संक्रमण होने पर फिप्रोनिल 05% एससी 400-600 मिली/एकड़ दर से या लैम्ब्डा-साइहालोथ्रिन 5% ईसी 100 मिली/एकड़ दर से या क्लोरपाइरीफॉस 20 ईसी 500 मिली/एकड़ दर से या कार्बोफुरन 3जी 10 किग्रा/एकड़ की दर से छिड़काव करें।*
- *धान खेत में तना छेदक के संक्रमण की निगरानी के लिए 3 फेरोमोन ट्रैप/एकड़ रखें। जब भी नर कीट/जाल की संख्या 4 या 5 तक पहुँच जाए, तो अजाडिरक्टिन 0.15% ईसी 800 मिली/एकड़ दर से या क्लोरेंट्रानिलिप्रोल 4% जीआर 4 किग्रा/एकड़ 1:1 के अनुपात में रेत के साथ मिलाकर या क्लोरेंट्रानिलिप्रोल 18.5% एससी 60 मिली/एकड़ 200 लीटर पानी दर से या कार्टेप हाइड्रोक्लोराइड 4जी 10 किग्रा/एकड़ दर से छिड़काव करें।*
- *यदि भूरा पौध माहू की संख्या ईटीएल (5-10 माहू/पूंजा) से अधिक है, तो वैकल्पिक गीला और सुखाने की तकनीक (पानी लंबे समय तक खेत में खड़ा नहीं होना चाहिए) द्वारा चावल के खेत की सूक्ष्म जलवायु को बदलने की सलाह दी जाती है। यदि समस्या फिर भी बनी रहती है, तो ट्राइफ्लुमेज़ोपाइरिम 10% एससी 94 मिली/एकड़ दर से या पाइमेट्रोज़ीन 50% डब्ल्यूजी 120 ग्राम/एकड़ दर से या डाइनोटफ्यूरन 20% एसजी 80 ग्राम/एकड़ दर से या इमिडाक्लोप्रिड 17.8% एसएल 50 मिली/एकड़ की दर से या एसेफेट 75% 400 ग्राम/एकड़ की दर से छिड़काव करें। भूरा पौध माहू के लिए अनुशंसित कीटनाशकों का प्रयोग निर्दिष्ट मात्रा में ही करें। भूरा पौध माहू के संक्रमण के दौरान नाइट्रोजनयुक्त उर्वरकों के प्रयोग से बचें।*

- *यदि 1-2 दौजी में आच्छद अंगमारी प्रकोप देखा जाता है प्रोपिकोनाज़ोल 25 ईसी 200 मिली/एकड़ की दर से या हेक्साकोनाज़ोल 5ईसी 400 मिली/एकड़ की दर से या वैलिडामाइसिन 3एल 400 मिली/एकड़ की दर से या टेबुकोनाज़ोल 50% + ट्राइफ्लॉक्सीस्ट्रोबिन 25% डब्ल्यूजी 80 ग्राम/एकड़ की दर से छिड़काव करें। छिड़काव को 7-10 दिनों के अंतराल पर दोहराएं। एक एकड़ क्षेत्र के लिए 200 लीटर घोल का प्रयोग करें।*
- *जीवाणुज अंगमारी/जीवाणुज पत्ता अंगमारी रोग की स्थिति के मामले में, नाइट्रोजन उर्वरकों (यूरिया / डीएपी) की टॉप ड्रेसिंग बंद कर दें। यदि जल ठहराव की स्थिति है तो पानी निकाल दें और प्रति एकड़ 5 किलो पोटाश उर्वरक (एमओपी) प्रयोग करें। स्ट्रेप्टोमाइसिन सल्फेट (9%) + टेट्रासाइक्लिन हाइड्रोक्लोराइड (1%) 120 ग्राम/एकड़ और कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 200 ग्राम प्रति एकड़ 200 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव सुबह या दोपहर में करना चाहिए।*
- *यदि पत्ता प्रध्वंस देखा जाता है, बीमारी को नियंत्रित करने के लिए टेबुकोनाजोल 50% + ट्राइफ्लॉक्सीस्ट्रोबिन 25% (नैटिवो 75 डब्ल्यूजी) 80 ग्राम प्रति एकड़ दर पर या एडिफोनफेस 50 ईसी 2 मिली/लीटर की दर से पानी में मिलाकर छिड़काव करें या या ट्राईसाइक्लाज़ोल 75 डब्ल्यूपी 0.6 ग्राम/लीटर की दर से छिड़काव करें या वैकल्पिक रूप से, बेल के पत्तों (25 ग्राम ताजी पत्तियां) का निचोड़ का छिड़काव या तुलसी (25 ग्राम ताजी पत्तियां) या नीम (200 ग्राम ताजी पत्तियां) प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करने पर रोग कम करने में मदद कर सकता है। साथ ही, ट्राइकोडर्मा विरिडे (न्यूनतम 10^8 सीएफयू) 2 किग्रा/एकड़ की दर से जैसे बायोकंट्रोल एजेंट का उपयोग किया जा सकता है। एक एकड़ क्षेत्र के लिए 200 लीटर घोल का प्रयोग करें।*
- *सीधे बीज वाले चावल में भूरा धब्बा होने की स्थिति में, प्रोपिकोनाज़ोल 25 ईसी 200 मिली/एकड़ की दर से या मैनकोज़ेब 75डब्ल्यूपी 500 ग्राम/एकड़ की दर से या कार्बेन्डाजिम 50डब्ल्यूपी 400 ग्राम/एकड़ की दर से या कार्बेन्डाजिम 64% + मैनकोज़ेब 8% 75डब्ल्यूपी 300 ग्राम/ एकड़ की दर से एक एकड़ क्षेत्र के लिए 200 लीटर घोल का प्रयोग करें।*
- *ऊपरीभूमि धान में जब गंधी बग की संख्या आर्थिक सीमा स्तर से अधिक हो जाती है, अर्थात 2 वयस्क कीट/पूंजा या 5 वयस्क कीट/वर्गमीटर होने पर मैलाथियान 5% 10 किग्रा/एकड़ की दर से एक झाड़ दें या एटोफेनप्रोक्स 10 ईसी 200 मिली/एकड़ की दर से या क्लोरोपायरीफॉस 20% ईसी 1000 मिली/एकड़ की दर से छिड़काव करें।*
- *किसानों को सलाह दी जाती है कि वे धान की खेती के सभी पहलुओं के लिए एनआरआरआई द्वारा विकसित राइसएक्सपर्ट मोबाइल ऐप (गूगल प्ले स्टोर में उपलब्ध) को डाउनलोड करें और उसका उपयोग करें।*
- *जहां नमी की कमी के कारण धान की खेती नहीं किए गए हैं, वहां किसानों को सलाह दी जाती है कि वे खेत उपलब्ध मिट्टी की नमी का उपयोग करते हुए कम अवधि की रबी पूर्व फसलें जैसे अमरनाथ, रागी, कुल्थी, मूंग, उड़द, लोबिया, शकरकंद और तिल को ऊपरीभूमि/मध्यम भूमि में खेती करें।*

कम दबाव के कारण भारी वर्षा वाले क्षेत्रों के लिए आकस्मिक कृषि परामर्श

यह देखा गया है कि पिछले कुछ दिनों से भारी और लगातार वर्षा के कारण अधिकांश धान के खेत या तो पूरी तरह से या आंशिक रूप से जलमग्न हो गए हैं। उक्त शर्तों के तहत, किसानों को निम्नलिखित प्रथाओं का पालन करने का सुझाव दिया जाता है:

- *जहाँ भी संभव हो धान के खेतों से अतिरिक्त पानी निकाल दें।*
- *निम्न दबाव बनने के कारण, कुछ जिलों (जैसे, मयूरभंज, क्योंझर, बालेसोर, भद्रक, जयपुर, कटक, गंजाम, जगतसिंगपुर, केंद्रपड़ा, पुरी, नयागढ़, खोर्धा, मालकानगिरी और कोरापुट) में आगामी कुछ दिनों में पर्याप्त वर्षा हो सकती है। छिड़काव गतिविधियों, निराई-गुड़ाई और अन्य अंतरपारंपरिक कार्यों को स्थगित कर दें। धान के लिए, नाइट्रोजन उर्वरक (जैसे, यूरिया) की पूरी टॉप ड्रेसिंग करें। जल स्तर 3-5 सेमी बनाए रखने के लिए मेड़ बनाएं और जहां आवश्यक हो वहां अतिरिक्त पानी हटा दें।*
- *देर से रोपे गए धान के मामले में, झुंड वाली इल्लियों का संक्रमण हो सकता है। ऐसे में 2 लीटर/हेक्टेयर की दर से मिट्टी का तेल डालें और रस्सियों से चावल के पौधों को जोर से हिलाएं। यदि संक्रमण जारी रहता है तो कोई भी कीटनाशक जैसे क्लोरपाइरीफॉस 20 ईसी 500 मिली/एकड़ की दर से या लैम्ब्डा-साइहलोथ्रिन 5% ईसी 200 मिली/एकड़ की दर से या क्विनालफॉस 25% ईसी 800 मिली/एकड़ की दर से प्रयोग करें।*
- *वर्तमान की स्थिति जैसे बादल भरे आसमान, उच्च आर्द्रता, दिन के उच्च तापमान के साथ रुक-रुक कर वर्षा लेकिन कम रात का तापमान जीवाणुज अंगमारी, जीवाणुज पत्ता अंगमारी, पत्ता प्रध्वंस आदि जैसे कई रोगों के लिए अत्यधिक अनुकूल है। इसलिए, अपने खेत पर निगरानी रखें। जीवाणु रोगों के लिए प्रति एकड़ 200 लीटर पानी में 100 ग्राम प्लांटोमाइसिन और 200 ग्राम कॉपर ऑक्सीक्लोराइड मिलाएं। प्रध्वंस होने की स्थिति में टेबुकोनाजोल 50% + ट्राइफ्लॉक्सीस्टोबिन 25% (नैटिवो 75 डब्ल्यूजी) 80 ग्राम/एकड़ की दर से या एडिफेनफॉस 50 ईसी 100 मिली/एकड़ की दर से या कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यूपी 400 ग्राम/एकड़ की दर से छिड़काव करें।*